International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 01-02

मालती जोशी के साहित्य पर मध्यम वर्गीय चेतना का विकास

डॉ० सुरेश प्रसाद चौधरी [1]
[1] हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
मालती जोशी के साहित्य पर आधुनिक काल के साहित्य को देखने का प्रयास करते हैं तो कथा साहित्य में नारी चित्रण विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। मालती जोशी के जीवन में मध्यमवर्गीय चेनता का विकास कैसे होता हैं। यह मानव जीवन की अनेक विसमताओं का परिणाम हैं। जहाँ मानव–मानव के भेदात्मक सीढ़ी से भरा पड़ा हो। वहाँ समय और समाज की विसमषताओं का परिणाम ही दिखाई देता है।
मालती जोशी ने उपन्यास साहित्य में मध्यमवर्गीय परिवार को केन्द्र बिन्दु बनाकर इन्होंने समाज के सामने एक आईना प्रस्तुत किया है। जिसके सम्बन्ध में कहती है। किसी भी स्त्री में विवाह के बाद विभिन्न समस्याऐं उत्पन्न होती है। यहाँ तक दोनों के विचारों का न मिलना भी है। जहाँ व्यक्ति की विचारधारा का परिणाम ही मानव की अवहेलना का कारण बन जाता है। पारिवारिक द्वेषु और उलझनों से भरा समाज का यह परिदृश्य सामाने आता है। जहाँ मानव समाज के विचारों का आधार ही मानवीय विचारधारा का परिणाम होता जा रहा है। इस प्रकार से इन मध्यमवर्गीय परिवार में उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों का परिणाम ही है।
मालती जोशी के विश्वगाथा के केन्द्र बिन्दुओं के परिणाम स्वरूप सशक्त नारी चरित्र की ओर ध्यान आकृष्ट कराती है। जहाँ ऐसे मध्यमवर्गीय परिवार में नारी के चरित्र को प्रस्तुत करती है। उसके विपरीत एक ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है। जहाँ वह नारी किसी दूसरे के शोषण का शिकार होती है। इस प्रकार से घर और ससुराल के साथ में पति की अनेक उपेक्षाओं को झेलना उसे अत्याचार को सहने वाली अनेकों महिलाओं का प्रतिनिधित्व मालती जोशी के उपन्यास शोभायात्रा में इन कठिनाईयों का वर्णन करती है। जहाँ समय और समाज की अनेक कठिनाईयों का परिणाम स्त्री और पुरूष की समस्या भरा जीवन है। जहाँ नारी का जीवन अकुलाहट भरा है। ऐसी अनेक स्थितियों में जीवन और जगत् की कठिनाईयों को देखने से पता चलता है।

मूल शब्द: उपन्यास साहित्य, चरित्र

प्रस्तावना
इस शोध पत्र में मालती जोशी के साहित्य पर मध्यम वर्गीय चेतना का विकास नाम शोध पत्र में द्वितीयक शोध सामाग्री के द्वारा अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। जहाँ मध्यम वर्गीय नारी चेतना पर आधारित है। जिसे स्वयं के जीवन में किन–किन परिस्थितियों में चलना पड़ता है। इस हेतु विद्वानों का मार्गदर्शन और पुस्तकालय के माध्यम से एकत्रित की गई सामाग्री का संकलन कर शोध पत्र बनाया गया है।

समस्या
- मालती जोशी के उपन्यास में मध्यम वर्गीय नारी की समस्या का चित्रण है।
- मालती जोशी के उपन्यास साहित्य में मूल्यों के विघटन की समस्या विद्यमान है।
- मालती जोशी के कृतित्व में सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करन।
- मालती जोशी के साहित्य में पारिवारिक समस्याओं का अध्ययन करना।
- मध्यम वर्गीय महिलाओं में पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं का अध्ययन।

उद्देश्य
मालती जोशी के साहित्य में मध्यम वर्गीय परिवार की महिलाओं को अनेकों समस्याओं का समाना करना पड़ता था। भारतीय समाज में स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार वर्षों से सहते आ रही हैं। जिस आधार पर सामाजिक और वैचारिक समस्याओं से जुड़े अनेक सबाल आज आधुनिकता की नारी और समाज दे रहा है।
इन्हीं कारणों से विचार धारा और समाज की स्थिति से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विचार विमर्श का केन्द्र बनता जा रहा नारी शोषण की मुक्ति। फिर भी संवैधानिक विचारधारा का परिणाम होने के कारण विचार धारा पर निरूपित होती है।
भारतीय समाज में दहेज को लेकर अनेकों समस्याऐं विद्यमान है। जहाँ परम्पराऐं विचारधाराऐं मानव को संकुचित कर दी है। इन्हीं विचारधाराओं के कारण नारी पर अत्याचार होते रहे हैं।
मालती जोशी के विचारधाराओं का अध्ययन मालती जोशी के साहित्य में मिलता है। जिन्होंने नारी की समस्याओं को बड़ी सावधानी से पूर्ण करने में सहायता की है। समय और समाज की अनेक कठिनाईयों का परिणाम नारी की दशा और दिशा है। जिसके माध्यम से मानव की अनेक विचारधाराओं का परिणाम दिखाई देता है। इन विसंगतियों के परिणाम स्वरूप सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विसंगतियों का एक दायरा निरूपित करते हैं।
उस वैचारिक समाज में चाहे वह पढ़ा लिखा व्यक्ति हो या अनपढ़ दोनों में विद्वेषु की भावना पनप रही थी। उस समय मालती जोशी ने जो सत्वना दिखाई गई नारी उन्नति में कारगर साबित होती है। इस स्थिति के परिणाम स्वरूप मानव का विचार एक आर्थिक स्थितियों के परिणाम स्वरूप एक विपरीत दिशा की ओर दिखाई देता है। जहाँ एक व्यवस्था के रूप में देखना और समझना बड़ी जबावदारी का कार्य समझा गया है।
खुशबू का एक अनुपम सौन्दर्य का झोंका आया जिसको रंजना ने

सीढ़ियाँ के लाघती हुई नीचे को उतरती है। उन स्थितियों के परिणाम स्वरूप उनके मन में हमेशा यह कसक पैदा होती है। कि एक बेटी भी होती। ऐसा सदियों से सुनते आ रहे हैं कि लड़कियाँ माँ–बाप पर अपनी जान छिड़कती हैं। किन्तु इस घर की दशा ही निराली है। किसी व्यक्ति को किसी भी व्यक्ति की परवाह नहीं है। इनमें सबकी अपनी नई दुनिया दिखाई देती है। अपने कार्यक्रम है। रंजना अपनी दादी से बहुत प्यार करती हैं। जिनके प्यार की परिभाषा का दृष्टिकोण ही अलग–थलग है। जहाँ मानवीय जीवन और मूल्यों की अतंरंगता का प्रश्न ही नहीं उठता है। यही कहते हुऐ रंजना कि मैं दादी की सेवा अभी यहाँ रह कर कुछ दिनों तक करूँगी। दादी ने रंजना के सिर पर प्यार के भरे उल्लास के साथ हाथ थपथपाने लगती है। जिनके मनोमय प्रसंग से एक प्रेम विभोर सौन्दर्य का संचार होता है।

मालती जोशी के विचारों में एक बड़ी विसमर्णीय संवेदना का संचार दिखाई देता है। उनके सामने परिवर्तित परिस्कृत संचरण दिखाई देता है। मालती जोशी मानवीय संवेदनाओं के जीवन को जीने के लिए एक बरामदे में बैठे हुए। ईश्वर का नाम जप रही थी। चौकते हुए उनकी नजरे घड़ी की तरफ जाती है। उस स्थिति में मानवीय संवेदना और साहित्य का सृजन करती है। इन्हीं विचारधाराओं के परिणाम स्वरूप मानव का जीवन एक प्रवाह की तरह बढ़ता घटता रहा है। यहाँ जीवन के अनेक वैचारिक संचरण का वहाँ पर मानवीय जीवन की कला का साहित्य के क्षेत्र में अविस्मर्णीय योगदान रहा है।

इस प्रकार से मानवीय संवेदना का सृजन भी सामाजिक समरसता के लिए बहुत बड़ा औचित्य होने के लिए उसी समय उनकी निगाहे रोड़ की तरफ जाती हैं। मालती जोशी के साहित्य में गुजरने वाली गाड़ियों गुजती आवाज सुनाई देती है। मालती जोशी एक उपन्यास लेखिका हैं। जिन्होंने आर्थिक मूल्यों को बड़ी ही वैचारिक विंसगतियों से जूझते हुए लेखन कार्य करने का प्रयास किया गया है। इन तथ्यों के परिणाम स्वरूप मालती जोशी जी का जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में होता है। मालती जोशी का पालन–पोषण नाना जी के यहाँ होता है। वैवाहिक जीवन के बाद इनका नाम कुल. मालती कृष्ण राव दिघे था। राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव से कार्य करने में मानवीय संवेदना का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिनके जीवन में मानवीय विचारधारा का परिणाम दिखाई देता है। जिन विशेषताओं की ओर ध्यान दिया है। उन विशेषताओं का परिणाम ही मानव समाज का एक अछूता चेहरा माना जाता है।

कबीर की वाणी में ओजस्वी स्वर भी सुनाई देता है। उन परम्पराओं के सवेदना का परिणाम ही मानव जीवन की कड़ी बन गया है। उनके सामने सामाजिक विचारधारा का परिणाम ही समाजिकता का ही स्वर दिखाई देता है। जहाँ एक वैचारिक धरातल ही विचार का केन्द्र बिन्दु रही हैं। वहाँ पर अनेक परिवर्तन की धारा का नाम ही दिखाई देता हैं। दुनिया अनेकों बातों का साहित्यक विवेचन होता है। किन्तु नारी शोषण पर विवेचन करने वाली मालती जोशी की विचारधारा का सभी बातों में एक तारत्म्यता दिखाई देती है।

कोई भी व्यक्ति कितना किया यह भारतीय समाज और मूल्यों के लिए औचित्यपूर्ण प्रश्न है। जहाँ विचार और समाज की संगतियों का विचार व्यक्त रूपों में दिखाई देता है। मानवीय मूल्य जीवन की कसौटी का सबसे बड़ा परिणाम है। जहाँ विभिन्नता का स्वरूप स्वयं में एक कथा का स्वर्णिम भाग दिखाई देता है। उन परम्पराओं के परिणाम स्वरूप जीवन की कार्य प्रविधि का प्रयोग किया जाना समीचीन होता है। मालती जोशी के कथा साहित्य में मूल्यों की पराकाष्ठा दिखाई देती है। मालती जोशी कहती है कि हृदय में बसने वाले भगवान के लिए कोई भी कार्य अलग से करने की जरूरत नहीं है। इसी कारण मन से किया गया कोई भी कार्य ज्यादा सफल होता है। मानव की मानवीय संवेदना का परिणाम ही मानव की विचारधारा पर निर्भर करता है। मोह माया की अविरल विचारधारा प्रत्येक व्यक्ति में उत्पन्न होती है। ऐसी अनेक विसंगतियाँ से मानवीय जीवन की धारा का परिणाम ही दिखाई देता है।

भारतीय राष्ट्रीयता के लिए हमें धर्मपरायणता ही स्वीकार करती है। जहाँ जीवन और जगत् की सभी समस्याओं का परिणाम ही मानवीय विचारधारा पर निर्भर करता है। उस प्रेम को मालती जोशी ने जीवन के प्रत्येक क्षण में अविस्मरणीय मानती है। इस मानवीय मूल्यों को जीवन के प्रति एक राष्ट्रीयता का भाव जाग्रत होता है। ऐसी विसंगतियों के परिणाम स्वरूप मानव का जीवन मूल्यों में समाहित होता जा रहा हैं। इन्हीं बातों का बढ़ते हुए सुषमा शुक्ला जी कहती हैं कि यह जिन्दगी और घर तुम्हारा है। इसे तुम्हे ही निभाना पड़ेगा और कोई नहीं निभायेगा। जीवन और जगत् की समस्या में तुम्हारा ही हाथ है। अन्यथा सब कुछ व्यर्थ हैं। उसी प्रकार मालती जोशी के साहित्य स्तम्भ के रूप में मानव के लिए एक विचरणीय पहलू का काम करते है। इन्हीं समस्याओं के साथ प्रत्येक व्यक्ति जीवन की कठिनाईयों से लड़ने में सफलता प्राप्त करता है।

निष्कर्ष

मालती जोशी ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रति एक सामाजिक प्रतिभा को उत्पन्न करने में एक अहम भूमिका निभाई है। जहाँ पर समाज की अनेक परम्पराओं के प्रति जीवन और जगत् का वर्णन आता है। वहाँ सामाजिक जीवन की अनेक कठिनाईयों का वर्णन भी किया जा सकता है। पति के प्रति जो स्त्री सोचती है वास्तव में उसका एक वैचारिक संस्कार भी दिखाई देता हैं। इसी प्रकार समाज और क्रान्ति का नाम ही मानव की विचारधारा पर निर्भर करता है।

सन्दर्भ

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, नवीनतम संस्करण, 1997, पृष्ठ 238
2. मालती जोशी, पिया पीर न जानी, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृष्ठ 46
3. मालती जोशी, पिया पीर न जानी, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृष्ठ 48
4. मालती जोशी, पिया पीर न जानी, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृष्ठ 57
5. मालती जोशी, वो तेरा घर ये मेरा घर, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 16
6. मालती जोशी, पिया पीर न जानी, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2013, पृष्ठ 36